जल–संरक्षण के हक में –

”जल जीवन–आधार है”

– डॉ॰ योगेन्द्र नाथ शर्मा ‘अरूण’, डी॰ लिट्॰

जल जीवन–आधार है, जगती का है मूल !
जल बिन सब जग सून है, कभी न यह सच भूल !!

ठोस, तरल अरू भाप हैं, तीनों जल के रूप !
इस जल को मानव समझ, इस धरती का भूप !!

वर्षा–जल वरदान है, धरती का श्रृंगार !
बिन वर्षा जलती धरा, होता हा–हा कार !!

जल बिन जग जल जाएगा, मनुज न बन नादान !
जल–संरक्षण कर मनुज, तभी बचेगी जान !!

भूजल से मिटती रही, सदा सृष्टि की प्यास !
दूषित करके जल मनुज, होगा महा विनाश !!

जलना हो जो जगत में, जल को करें विनष्ट !
जल बिन मछली की तरह, मनुज पाएगा कष्ट !!

वर्षा के जल से सदा, मिटे धरा की प्यास !
अंकुर फूटें अन्न के, पूरी हो हर आस !!

जल जीवन देता सदा, साक्षी है विज्ञान !
जल से सुख पाए सदा, धरती पर इंसान !!

जल–संरक्षण के बिना, होंगे सपने चूर !
जल–संरक्षण से मनुज, अन्न मिले भरपूर !!

जल का संरक्षण बने, सदा मनुज का धर्म !
जल के बिन निष्फल रहे, जीवन का हर कर्म !!

.... X ....

(डॉ॰ ‘अरूण’ की शीघ्र प्रकाशित होने वाली पुस्तक ‘पर्यावरण–चेतना’ से साभार)